सुधा अरोड़ा के उपन्यास 'यहीं कहीं था घर' में विवाह संबंधी रस्में (पंजाब का संदर्भ)

डॉ. अरवीना शर्मा
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय,
अमृतसर।

कुजियाँ (Keywords):– देखा दिखाई की रस्म, योग्य वर ढूँढ़ना, कुण्डली मिलान, रोका, शगुन, चुन्नी चढ़ाने की रस्म, गीत बैठाना, स्नान एवं श्रृंगार, बारात का स्वागत, बारात को भोजन करवाना, जयमाला पहनाना, मंडप सजाना, ग्रन्थिबंधन, फेरे, लड़की का नाम बदलने की रस्म, सप्तपदी, शिक्षा सुनाना, डोली।

हिन्दी कथा–साहित्य में सुधा अरोड़ा ने अपनी एक विशिष्ट छवि बनाई है। इनके साहित्य में कहानी–संग्रह, उपन्यास, कविता, एकांकी इत्यादि है। इन्हें लेखकीय प्रेरणा अपने माता–पिता दोनो से मिली क्योंकि उन दोनों का हिन्दी साहित्य के प्रति गहरा लगाव था। इनका लेखन साहित्य की अमूल्य निधि है। साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि दूरदर्शन, रेडियों, पत्र–पत्रिकाओं और मीडिया के क्षेत्र में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। कथाकार होने के साथ–साथ इन्होंने फिल्मों की पटकथा, रडियो नाटक, टी.वी. धारावाहिकों और पत्र–पत्रिकाओं के लिए भी बहूमूल्य लेखन किया है। कह सकते है कि सुधा अरोड़ा सातवें दशक की बहुचर्चित और प्रतिबद्ध कथाकार है।

सुधा अरोड़ा का जन्म 4 अक्टूबर 1946 में लाहौर (पाकिस्तान) में कूचा कागजेयाँ के मोची दरवाज़े वाले मोहल्ले में हुआ। अभी यह एक वर्ष की भी नहीं हुई थी कि भारत–पाक विभाजन के कारण इनके परिवार को कलकत्ता आ कर बसना पड़ा। इनका मध्यवर्गीय परिवार संस्कारी एवं परम्परावादी रहा हैं। जो कि पुरानी मान्यताओं वाली पृष्ठभूमि से जुड़ा रहा। लेखिका का विवाह जितेंद्र भाटिया के साथ जयपुर में ठेठ पंजाबी रीति–रिवाज़ से हुआ। कलकत्ता के प्रति विशेष रूचि होते हुए भी सुधा जी के अंदर पंजाबी लहजा रचा बसा है जिसका प्रभाव इनके साहित्य में मिलता है।

पंजाब में विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न किया जाता है। पुरातन समय में तो विवाह में बहुत–सी रस्में की जाती थी परन्तु अब समय का आभाव होने के कारण पहिले की अपेक्षा बहुत कुछ परिवर्तित हो गया है। सुधा अरोड़ा के उपन्यास 'यहीं कहीं था घर' में पंजाबी विवाह संस्कार का वर्णन मिलता हैं। यह विवाह पंजाब के जिला अमृतसर में लेखिका ने लड़की की शादी में होने वाली रस्मों को बहुत विस्तार पूर्ण हमारे सामने प्रस्तुत किया हैं। वैवाहिक रीति–रिवाज़ों से उन रस्मों को निबाते हुए विवाह वाली लड़की तथा उसके संपूर्ण परिवार को किन–किन रूढ़िवादी रस्मो से गुजरना पड़ता हैं–उसका वर्णन मिलता हैं।

इन विवाह संबंधी रीतियों का निर्वाह इस प्रकार है।

देखा दिखाई की रस्म

आधुनिक समय में भी कुछ रूढ़िगदी परिवारों में बेटियों के विवाह की प्रक्रिया लड़कियों के लिए काफी परेशानी देने वाली होती हैं। उन्हें बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि यह घर उनका नहीं हैं। उनके विवाह की प्रक्रिया में सबसे पहले लड़की की देखा–दिखाई आती हैं। तरह–तरह के लोग लड़की को देखने आते हैं तथा कुछ तो मुँह पर ही न बोल जाते हैं ऐसी स्थिति में नारी इन प्रथाओं से संघर्ष करती हुई निकलती हैं कुछ नारियाँ तो इस प्रथा का विरोध करती है तो कुछ चुप–चाप सब कुछ सहती हैं। 'यहीं कहीं था घर' उपन्यास में जिस दिन सुजाता को लड़के वालो ने देखने आना है उस दिन सुजाता के हाथ–पैर डर के मारे ठंडे हो रहे होते हैं। वह अपनी छोटी बहन विशाखा को स्कूल से छुट्टी करने को कहती हैं तथा अपनी मनोस्थिति का वर्णन करती हुई कहती है– ''शिखा, तू मां से बोल न, यह सब तमाशा न करे, मुझे डर लगता हैं।''[1]

उस समय सुजाता भीतर से डरी हुई होती हैं। जब रिश्तेदार देखने आते है तो सुजाता को एक मूर्ति के रूप में सबके सामने बिठा दिया जाता हैं जैसा कि इन पंक्तियों से स्पष्ट हैं–''उन लोगों के सामने सोफे पर मूर्ति बनी बैठी सुजाता की, अपनी साड़ी को दोनों हाथों से संभाले हुए, पर इस आशंका के त्रस्त कि कहीं साड़ी खुल न जाए।''[2] इस तरह सुजाता को न चाहते हुए भी इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता हैं–क्योंकि सुजाता घर वालों के सामने कुछ नहीं बोलती वह उनकी बेहद संस्कारी लड़की है। सब कुछ चुप–चाप स्वीकार करती हैं।

योग्य वर ढूँढना

विवाह संस्कार में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य माता–पिता के लिए उनकी कन्या के लिए योग्य वर ढूँढना होता है। जब लड़की की आयु विवाह योग्य हो जाती है तब माता–पिता बेटी के लिए स्वस्थ, सुन्दर एवम् उचित वर की तलाश करते हैं। वह अपने सगे–संबधियों को भी वर ढूँढने को कहते है। पहले यह कार्य–क्रम पुरोहित करता था। समय के साथ परिवर्तन आने पर अब यह कार्य माता–पिता अथवा संबंधी जन करते है। कभी–कभी कन्या भी स्वयं अपने अनुकूल पति ढूँढ लेती है और फिर माता–पिता की इच्छा से उसके साथ उसका विवाह कर दिया जाता है। 'यहीं कहीं था घर' उपन्यास में सुजाता के शादी योग्य होने पर उसके पिता जी अपने संगे संबंधियों को उसके लिए वर ढूँढने को कहते हैं। अन्ततः उन्हें योग्य वर मिल जाता है। लड़के की जमशेदपुर में जूतों की दुकान है। दोनों परिवारों मे पिछली लाहौर की जान–पहचान भी निकल आई थी। इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है। ''उन्नीस वर्षीय सुजाता की शादी जमशेदपुर के पंजाबी जुनेजा परिवार के यहां तय हो गई।''[3]

लग्न पत्रिका/कुण्डली मिलाना

वर निश्चित करने के पश्चात दोनों पक्षों के लोग पण्डित द्वारा जन्म पत्रिका मिलान करते हैं। इसी के आधार पर विवाह संबंधी शुभ मुहूर्त निकलवाया जाता हैं। जुनेजा परिवार आर्यसमाजी था उनके यहां पत्रिका बनवाने का रिवाज नहीं था परन्तु तनेजा परिवार बिना कुण्डली मिलाए शादी नहीं कर सकते थे। सुजाता के पिता जी ने लड़के की जन्म तिथि, समय, वार, संवत् मंगवाया तथा पण्डित दीनदयाल जी से कुण्डली मिलान करवाया। पण्डित जी सबको बताते है कि ''नरेन्द्र जुनेजा के साथ सुजाता तनेजा की जन्मपत्री मिल गई थी। उनके अनुसार लड़का–लड़की की कुंडली में 26 गुण मिलते थे, जो शादी के लिए ग्रीन सिग्नल था।''[4] इस तरह दोनों परिवारों की तरफ से हा हो जाती हैं।

रोका/ठाका

''प्राचीन समय में गांव का नाई अथवा पुरोहित लड़के वालों से लड़की वालों की तरफ से बातचीत करता था। रिश्ता पसंद आने पर संबंध निश्चित किया जाता था। अतः उन्हीं के हाथ दक्षिना, उपहार, मिष्ठान आदि भेज कर रोकने की रीति पूरी की जाती थी।''[5] परन्तु आज कल कन्या पक्ष के माता–पिता, सगे–संबंधी यह रीति पूर्ण करते हैं। सुजाता के घर वाले भी जुनेजा परिवार के घर जा कर अपनी लड़की के लिए नरेन्द्र को पाँच सौ का नोट दे कर रोकते है। विशाखा इस रस्म के बारे में पूछती है तो माँ के शब्दों

में ''रोकने की रस्म तो मामूली सी रस्म है, लड़के के हाथ में पाँच सौ एक रुपये धरे और बात पक्की हो गई न किसी को बुलाया, न मिठाई बांटी, अब सगाई की रस्म में ही सब होगा।''[6]

शगुन लगाना

शादी से एक–दो दिन पहले लड़के को शगुन लगाने की रीति पूरी की जाती है। प्राचीन समय में कन्या पक्ष की तरफ से कन्या के पिता, भाई, संगे संबंधी शगुन लेकर लड़के वालों के घर या निश्चित किए स्थान पर जाते थे। आज कल कन्या पक्ष की ओर से लड़की की बहने तथा भाभियाँ भी शगुन लेकर जाती हैं। शगुन की सामग्री में ''फल, मिठाई, छुआरे तथा कुछ रुपये भेंट के रूप में दिए जाते है।''[7] फल मिठाई के अतिरिक्त लड़के को कोई स्वर्ण आभूषण तथा लड़के के सभी परिवार वालों तथा रिश्तेदारों को रुपये दिए जाते हैं। लड़की के भाई द्वारा लड़के को तिलक लगाया जाता हैं। पण्डित द्वारा मंत्रोउच्चारण विधि से रीति सम्पन्न करते हुए लड़के को छुआरा भी खिलाया जाता हैं। सुजाता के परिवार वाले भी शादी से दो दिन पहले शगुन ले कर नरेन्द्र जुनेजा के घर जाते है। शगुन में दिया जाने वाले सामान का वर्णन इस प्रकार हैं–''रूपहली किनारी टंके लाल साटन के कवर से चाँदी का वर्क लगी मिठाइयों के इक्कीस थाल ढंके गए, फलों की दो टोकरियों, लाल सुर्ख कश्मीरी सेबों की दो पेटियों पर लाल कागज लपेटे जा रहे थे।''[8]

यह सब सामान लेकर लड़की वाले गए थे। शगुन की रस्म पूरी करके शाम तक घर लौटे।

चुन्नी चढ़ाने की रस्म

लड़के को शगुन लगाने के बाद लड़के वालों की तरफ से कुछ स्त्रियाँ लड़की को (कन्या) चुन्नी चढ़ाती हैं। पहले यह रीति विवाह से महीनों पहले सम्पन्न की जाती थी परन्तु अब यह रीति विवाह के एक–दो दिन पहले शगुन वाले दिन ही पूरी की जाती हैं। लड़के वालों की तरफ से कन्या के लिए ''चीनी, गोला, चावल, छुआरे, रुपये, आभूषण, कपड़े, मेंहदी सम्मिलित होती हैं। लड़की के घर वाले यह भेंट स्वीकार करते हैं तथा लड़की वही वस्त्र–आभूषण पहनती है जो ससुराल पक्ष से आते है'' तथा वहीं चीनी और छुआरा खिलाकर चुन्नी की रस्म पूरी की जाती है।''[9]

सुजाता के ससुराल वाले भी चुन्नी की रस्म पूरी करने तनेजा परिवार के घर आते है। विशाखा के शब्दों में ''लड़के वाले तुम्हें चुन्नी चढ़ाने आए और तुम्हें वजन से ज्यादा वजनी साड़ी तुम्हें पहना गए।''[10]

गीत बैठाना

जब विवाह में आठ–नौ दिन रह जाते है तब सगे संबंधियों और आस–पड़ोस के घरों में गाने का न्यौता भेजा जाता हैं। पहले यह रस्म कम से कम पाँच दिन चलती थी परन्तु आज कल केवल एक दिन की ही यह रस्म रह गई है। जिसे लेडी संगीत कहा जाता है। रात के खाने के पश्चात रिश्तेदार, पड़ोस की स्त्रियां, लड़कियां कन्या के घर आ कर गीत गाती है। स्त्रियों द्वारा लड़की की शादी में सुहाग तथा लड़के की शादी में घोड़ियां गाई जाती हैं। सुजाता की शादी से चार दिन पहले ढोलक बजाते चम्च की खनक पर सभी मिल कर पंजाबी टप्पे, गीत गाते हैं जिनका वर्णन इस प्रकार हैं–

''नी बेटी चन्नन दे ओले ओले क्यों खड़ी
वे मैं तां खड़ी सां बाबुल जी दे कोल
बाबुल मुखड़े बोल
नी बेटी केहो जेहा वर लोड़िये
वे बाबुल ज्यों तारयां विच्चों चांद
चंदा विचो कान्ह
कैन्हैया वर लोड़िये।''[11]

तेल,उबटन लगाना एवं स्नान और श्रृंगार

''विवाह से कुछ दिन पहले 'उबटना' जिसे जो, हल्दी, खजूर तथा तिल के तेल से बनाया जाता है, लड़के और लड़की को लगाया जाता है। लड़की को एक चौकोर पटरे पर बैठाया जाता है तथा चार लड़कियां उसके ऊपर चादर तान लेती हैं। घर की स्त्रियां इस अवसर के गाने गाती हैं तथा उबटना लगाती हैं।''[12] उबटन, तेल लगाने के बाद कन्या को स्नान करवाया जाता हैं। स्नान करने के पश्चात कन्या दुल्हन के जोड़े को पहनती हैं तथा आभूषणों से श्रृंगार करती हैं। दुल्हन के जोड़े में तैयार हुई कन्या का अलग ही रूप दिखाई देता हैं। सुजाता भी जब दुल्हन का जोड़ा पहन कर तैयार होती है तो विशाखा दीदी को देखकर हैरान हो जाती हैं ''सुनहरी किनारी की बारीक काम से भरी हुई लाल साड़ी पहने सुजाता कहर ढा रही थी। विशाखा ने दीदी को देखा तो उसे लगा इतनी खूबसूरत दुल्हन उसने कभी नहीं देखी।''[13]

बरात का स्वागत एवं मिलनी की रस्म

''बारात लड़की के घर या कुछ दूर किसी निश्चित स्थान पर पहुँचने पर द्वार पर ही रूक जाती है तथा लड़की वाले बारात का स्वागत करते है। अतः ''द्वार पर रूक कर ही 'मिलनी' की रस्म की जाती है। दोनों ओर के बड़े लोग गले मिलते है। सबसे पहले पिता गले मिलते हैं उसके पश्चात दूसरे संबंधी अपने प्रतिरूप से मिलते हैं।''[14] मिलनी का अनुष्ठान बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। उपहार में वह रुपय, कंबल, सोने के गहने आदि देते हैं। सुजाता की शादी में बारात जब आती है तो उनका स्वागत किया जाता हैं। विशाखा नाचती हुई बारात को देखती हुई बताती हैं– ''सजायाफ्ता दूल्हे के सामने सूट–बूट–टाई से लैस हर उम्र के लड़के और बुजुर्ग 'मेरी प्यारी बहनियां बनेगी दुल्हनियां, सजके आएंगे दूल्हे राजा, भइया राजा बजाएगा बाजा.....' की धुन पर बेतहाशा भांगड़ा नाच रहे थे।''[15]

बारात को भोजन करवाना

लड़की के पिता लड़के वालों को भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं। पुरातन समय में ज़मीन पर बिठाकर भोजन करवाया जाता था। कन्या पक्ष के लोग सबसे पहले बारातीयों को बहुत प्रेम से भोजन करवाते थे परन्तु आजकल भोजन बारात को पाश्चात्य शैली में करवाया जाता हैं। सुजाता की शादी में बारात के आने का समय सात बजे का था परन्तु बारात नौ (9) बजे पहुँचती है जिसके कारण लड़की वालों को भी भूख लगी होती है बारातियों को भोजन के लिए बिठाना होता है पर लड़की वालें भी साथ बैठ जाते हैं।''बारातियों के साथ कुछ लड़की वाले भी पहले पंगत में बैठ गए। बड़े इत्मीनान से चटखारे ले–लेकर उन्होंने खाना खाया और पान–इलायची चबाते डकारें लेते नीचे उतर गए।''[16]

जयमाला पहनाना

बारात का स्वागत, मिलनी करने के उपरांत दूल्हे को स्टेज पर लाया जाता है। वहीं पर दुल्हन भी सोलह सिंगार करके स्टेज पर आती हैं। कन्या वर के गले में वरमाला डालती है और दुल्हा भी कन्या के गले में जयमाला डालता हैं। सभी रिश्तेदार उन पर फूलो की वर्षा करते है तथा बहुत खुश होते हैं फिर उन्हें स्टेज पर लगी कुर्सियों पर बिठा दिया जाता हैं। ''सुजाता की वरमाला की रस्म जब समाप्त हुई तब तक तनेजा परिवार के गुरू स्वामी सुखदेवजी महाराज विवाह पर आ चुके थे।''[17]

मंडप सजाना तथा चौक पूरना

विवाह वाले दिन फेरो के लिए मंडप की तैयारी सुबह ही आरम्भ कर दी जाती है। ''घर के आंगन में अथवा किसी खुले स्थान पर पंडित चौंक पूरता है।''[18] मंडप के बीच में लाल या गुलाबी कपड़ा तान दिया जाता है तथा चारों तरफ लगे बांसो को फूल मालाएं से डक दिया जाता है। चारों कोनों में एक–एक कलश भी रखा जाता है। वर–वधू के बैठने के लिए दो गद्देदार चौकियां भी रखी जाती है तथा ''दूल्हा, दुल्हन उसके सम्मुख पूर्व की ओर मुख करके बैठते हैं।''[19] सुजाता का मंडप विवाह भवन में बनवाया जाता हैं। शादी पर आएं लोग मंडप को देखकर तरह–तरह की बातें करते हैं। उनकी पंक्तियां इस प्रकार है– ''कह रहे हैं, रजनीगंधा के सफेद फूलों में लाल गुलाब सजाकर सुंदर–सा बंदनवार गूंथकर मंडप बनवाना चाहिए था। यह क्या ऊपर से नीचे तक गेंदे के बड़े–बड़े फूल लटका दिए। मंडप जैसा मंडप ही नहीं है।''[20]

ग्रन्थिबंधन

मण्डप में बैठे वर–वधू का गठवंधन होता हैं। इसके अंतर्गत वर के दुपट्टे के साथ ढ़ाई गज का लाल कपड़ा बांधा जाता है और उसका दूसरा छोर वधू के आंचल के साथ बांधा जाता हैं। इसी तरह सुजाता नरेन्द्र का ग्रन्थिबंधन करवाते हुए पण्डित जी कहते हैं ''वर के उपवस्त्र के साथ वधू के उत्तरीय वस्त्र की गांठ दीजिए। अब वर–वधू को साथ लेकर ईशान दिशा में एक पग चले और चलाए।''[21] मत्रों का उच्चारण करते हुए पण्डित दीनदयाल शास्त्री जी–

''ओम्, इष एकपदी भव
ओम्, ऊर्ज्जे द्विपदी भव
ओम्, रायस्पोषाय त्रिपदी भव।''[22]

फेरे

एक ऐसी रस्म जिसमें वर–वधु अग्नि के (चारों तरफ) इर्द–गिर्द घूम कर सात चक्कर लगाते हैं तथा जीवन भर साथ रहने की प्रतिज्ञा लेते है। सुजाता के फेरो का मुहूर्त सवा एक बजे का था तब तक सभी दूर–दराज के रिश्तेदार जा चुके थे। दोनों पक्ष से केवल निकटीय रिश्तेदार ही रह गए थे। सुजाता के फेरे करवाते हुए पण्डित दीनदयाल शास्त्री जी मंत्रों का उच्चारण करते है–

''ओं चित्तं च स्वाहा, इदं चित्ताय––इदन्न मम।
ओं चित्तिश्च स्वाहा, इदं चित्तयै––इदन्न मम।

ओं आकूतं च स्वाहा, इदमाकूताय......इदन्न मम।''[23]

फेरों के पश्चात् लड़की का नाम बदलने की रस्म

कहा जाता है कि यदि वर–वधु की राशि मिलान ठीक ढंग से न हुआ हो तब फेरो के वक्त लड़की का नाम बदला जाता है ताकि दोनों के वैवाहिक जीवन सुखद बना रहे। परन्तु कुछ लोगों को यदि लड़की का नाम पसन्द न हो तब भी वह फेरो पर उसका नाम बदलवा देते हैं। सुजाता की शादी मे जब उसके फेरे हो रहे होते है तभी पंडित जी पूछते है ''बहनजी, कन्या का नाम यही रहेगा या आप बदलना चाहती हैं?''[24] सुजाता की सास को तो पहले ही सुजाता नाम पसन्द नहीं था वह तो खुश हो जाती हैं। तभी लड़के वाले सुजाता की जगह रेणुका नाम रख देते हैं।

सप्तपदी

''लावों तथा मांग भरने के पश्चात सप्तपदी अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। इसके लिए वर और कन्या के आगे चावलों की सात ढेरियां लगाई जाती हैं। इन सात ढेरियों पर वर और कन्या साथ–साथ पैर रखते हैं और साथ–साथ उन्हें सात शिक्षाएं दी जाती हैं।''[25] ''सप्तपदी का अभिप्राय यह है कि वर–वधू दोनों को इस बात की प्रतीति कराई जाती है कि यह आश्रम आराम से बैठे रहने का नहीं है, इस आश्रम के कुछ उद्देश्य हैं, प्रयोजन हैं, उन प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए एक साथ चलना होगा।''[26] यह शिक्षाएं/प्रतिज्ञाएं पण्डित जी वर–वधु दोनों को समझाते हैं–कि पति–पत्नी के पावन रिश्ते में बंधने पर उन्हें किन्न–किन्न नियमों का पालन करना होगा। पण्डित जी द्वारा श्लोको का अर्थ भी समझाया जाता है। सुजाता की शादी में भी पण्डित जी द्वारा प्रतिज्ञाओं का चरण आरम्भ होता हैं पण्डित जी वर को कहते हैं ''आप मेरे साथ यह प्रतिज्ञा दोहराइए।

ममेयमस्तु पोष्या मह्यै त्वादाद बृहस्पतिः
मया पत्या प्रजापति शं जीव शरदः शतम्।''[27]

''अब वधू भी वर से प्रतिज्ञा करे हे भद्रवीर! परमपिता परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हो। मेरे लिए आपके बिना इस जगह में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करने हाश सेव्य इष्टदेव कोई नहीं है। न मैं आपसे अन्य दूसरा किसी को मानूंगी।''[28]

शिक्षा सुनाना

विवाह हो जाने के बाद शिक्षा वर और वधु को सुनाई जाती हैं। जिससे ज्ञान प्राप्त करके वह अपनी गृहस्थी को सुचारू ढंग से चला सके। कभी –कभी शिक्षा पंडित द्वारा सुनाई जाती है तो कई बार वधू की सहेली द्वारा शिक्षा पढ़ी जाती हैं। सुजाता की शादी में

शिक्षा छपवाने की रस्म उसके मामा पूरी करते हैं। सुजाता के मामा शिक्षा सुनाने लगते है तभी औरतों ने वधु को टोकते हुए कहा शिक्षा ध्यान से सुनना बेटी। शिक्षा का गायन इस प्रकार हैं–

''धीयां धन पराया जहान उत्तें
मुड़्ढ़ों बनी होड़ रीत संसार दीए
पलणा किते ते वसणा किते जा के
लीला ओस सच्चे ते सिरजनहार दीए।''[29]

विदाई / डोली

''वधू जब ससुराल के लिए प्रस्थान करती है जिसे डोली कहते हैं।''[30] लड़की की विदाई का दिन माँ–बाप के लिए अत्यन्त ह्रदय विदारक होता हैं। इस रस्म में कन्या को हमेशा के लिए बाबुल के घर से ससुराल के लिए विदा किया जाता है। सुजाता की विदाई का समय भी आ गया। सुबह के पांच बज चुके थे चढ़ते सूरज के साथ उसकी डोली उठने वाली थी। सभी परिवार वाले बारी–बारी सुजाता को गले मिलते हैं। सुजाता की हालत– ''जिसकी आंखे डोली से पहले ही रो–रोकर सूज चुकी थी, अब रोने की स्थिति में भी नहीं रही थी।''[31]

इस तरह सुजाता की बिदाई की जाती हैं। सजाता की मां का रो–रो के बुरा हाल होता है तथा वह बेहोश होने की स्थिति में थी।

निष्कर्ष

सुधा अरोड़ा ने पंजाबी शादी के रीति–रिवाज़ों का बारिकी से वर्णन किया है। आधुनिक समय में भी कुछ परिवार ऐसे है जो आज भी पुराने रीति–रिवाज़ों की महत्वत्ता को जानते हुए उनका निर्वाह करते है। इस तरह लेखिका ने पंजाब की सुदृढ़ संस्कृति, पारम्परिक पहचान, विरासत को सहज स्वाभावि अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–67
2. वही, पृ–72
3. वही, पृ–84
4. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–84
5. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–51
6. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–86
7. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–51
8. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–106
9. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–52
10. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–112
11. वही, पृ–103
12. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–53
13. सुधा अरोड़ा, यहीं कही था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स 2010), पृ–120
14. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–51
15. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–124
16. वही, पृ–127
17. वही, पृ–126
18. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–55
19. वही, पृ–55
20. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–128
21. वही, पृ–134
22. वही, पृ–134

23. वही, पृ–133
24. वही, पृ–131
25. सुनीता शर्मा, डुग्गर के वैवाहिक लोकगीत : पहचान और परख, (दिल्ली : निर्मल पब्लिकेशन्स, 2005), पृ–123
26. सत्यव्रत सिद्वान्तालंकार, संस्कार–चन्द्रिका, (दिल्ली : विजय कृष्ण लखनपाल 2000), पृ–358
27. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–133
28. वही, पृ–133
29. वही, पृ–136
30. सोहिंदर सिंह बेदी, पंजाब : लोक संस्कृति और साहित्य (दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 1971, पृ–55
31. सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, (दिल्ली : सामयिक बुक्स, 2010), पृ–138